प्रेस विज्ञप्ति

आचार्य श्री महाप्रज्ञ चातुर्मास व्यवस्था समिति

सरदारशहर – 331 403

लाडनूंवासियों की अर्जी पर हुई मर्जी
आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने घोषित किया 2014 का चातुर्मास

सरदारषहर 2 मई।

राष्ट्रसंत आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने लाडनूं वासियों की अर्जी पर मर्जी करते हुए 2014 का चातुर्मास जैन विश्व भारती लाडनूं में करने की घोषणा की। आचार्य तुलसी के जन्म शताब्दि वर्ष के आयोजन का मुख्य केन्द्र के रूप में घोषित लाडनूं क्षेत्र को चतुर्मास प्रदान करने की स्वीकृति के साथ ही लाडनूं वासियों में खुशी की लहर छा गई। आचार्य महाप्रज्ञ की अनुमति से युवाचार्य महाश्रमण ने तिजोरी में सुरक्षित 2014 के चातुर्मास को लाडनूं वासियों को बक्साने की घोषणा की। जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय की कुलपति समणी डॉ. मंगलप्रज्ञा, जैन विश्व भारती के अध्यक्ष सुरेन्द्र चौरड़िया, 2009 चातुर्मास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष शांतिलाल बरमेचा, लाडनूं तेरापंथ महिला मण्डल, ओबीसी क्रांति परिसद के सचिव शंकर आकाश आदि लाडनूं वासियों के द्वारा की गई अर्ज का उत्तर देते हुए आचार्य महाप्रज्ञ ने कहा कि आचार्य तुलसी की जन्म शताब्दी वर्ष का समय की मांग लाडनूं वालों की है। इस मांग के साथ उनको ऐसी तैयारी करनी है कि सम्पूर्ण लाडनूं का व्यक्तित्व एक उदाहरण बन जाये और शताब्दि वर्ष का आयोजन की अमिट छाप कायम हो जाये। आचार्य तुलसी की जन्मभूमि लाडनूं और उनकी स्वप्नील आभा बिखेरने वाली विश्व विख्यात जैन विश्व भारती का यह चतुर्मास विशेष तौर पर सफल बनाने का संकल्प व्यक्त करने वाले लाडनूं वासियों को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि लाडनूं को उदाहरण बनाने का कार्य सभी का है। सबको इस ओर ध्यान देना है।

युवाचार्य महाश्रमण ने कहा कि इतने क्षेत्रों से चतुर्मास की अर्जी आई, अनेकों को चतुर्मास की बक्सीस भी हुई। पर आचार्यवर ने 2014 का चतुर्मास तिजोरी में सुरक्षित रख रखा था। आज उस तिजोरी का ताला खोल रहे हैं। युवाचार्यवर ने इसी संकेत के साथ आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी का मुख्य चतुर्मास जैन विश्व भारती लाडनूं में करने की घोषणा की। कार्यक्रम का संचालन मुनि मोहजीत कुमार ने किया।

आचार्य महाप्रज्ञ हुए बच्चों से मुखातिब

मन को स्वस्थ रखने की दी प्रेरणा

सरदारशहर 2 मई।

राष्ट्रसंत आचार्य महाप्रज्ञ प्रवचन में उपस्थित ज्ञानशाला के बच्चों से विशेष तौर पर प्रश्नात्मक शैली में मुखातिब हुए। उन्होंने कहा कि बड़े प्रवचन में रोजाना आते हैं पर आज रविवार है इसलिए काफी संख्या में मेरे सामने बच्चे बैठे हैं। उन्होंने कहा कि बच्चों को इस ओर ध्यान देना है कि शरीर को नास्ता कराते हैं पर क्या मन को भी नास्ता कराया या नहीं। मन का नास्ता होता है नमस्कार महामंत्र का जप। जब मन स्वस्थ रहेगा तो शरीर भी स्वस्थ होगा। आज बड़ी–बड़ी बीमारियों के पैदा होने के पीछे मन है। मन अस्वस्थ है, कषाय की प्रबलता है तो बीमारियां उत्पन्न हो जाती है। आचार्य महाप्रज्ञ ने क्रोध की अवस्थाओं की चर्चा करते हुए कहा कि कषाय को शांत करने की जरूरत है। उन्होंने क्रोध को कम करने के लिए दीर्घ श्वास के प्रायोगिक प्रशिक्षण हेतु युवाचार्य महाश्रमण को इंगित किया। आचार्य महाप्रज्ञ ने इस अवसर पर बच्चों के साथ सभी को मन स्वस्थ रखने की प्रेरणा देते हुए मंत्र के प्रयोग भी करवाये। आचार्य महाप्रज्ञ ने प्रश्नात्मक शैली में बच्चों को जीवन निर्माण के गूर भी बताये।

युवाचार्य महाश्रमण ने गीता और उत्तराध्ययन पर तुलनात्मक प्रवचन करते हुए कहा कि सभी प्राणियों को अपने समान समझना अहिंसा का महत्वपूर्ण सूत्र हैं उन्होंने भगवान की भक्ति से ज्यादा आज्ञा को मानने की जरूरत बताते हुए कहा कि हम भक्ति करते हैं पर हमारा आचरण सम्यक् नहीं है तो उस भक्ति की सार्थकता कम हो जाती है। उन्होंने कहा कि अपना अनुसंधान करना सबसे बड़ी भक्ति है।

शीतल बरड़िया

(मीडिया संयोजक)